प्राक्कथन

विषय का चुनाव :-

शोधार्थी को शोध कार्य प्रारंभ करने से पहले विषय का योग्य चुनाव करना आवश्यक होता है। विषय का चुनाव करते समय छात्रों के सामने अनेक सवाल खड़े हो जाते है। इसलिए शोधार्थी को उत्कृष्ट लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए योग्य विषय का चुनाव करना अनिवार्य है। आजकाल अनेक कवियों तथा साहित्यकारों और उनके कृतियोंपर अनुसंधान हो चुका है। मैंने सोचा कि, एक ऐसा विषय चुने कि जिसपर शोध कार्य न हुआ हो।

मेरे सामने विषय का चुनाव करते समय अनेक प्रश्न थे। मेरी मानसिक स्थिति द्विधावस्था में थी। तभी मेरे निर्देशक डॉ. वसंत मोरे जी ने बताया की श्रीलाल शुक्ल जी के "राग-दरबारी" उपन्यास पर किसी ने शोध-कार्य नहीं किया है। तभी मैंने निश्चय किया कि, "राग-दरबारी" उपन्यासपर ही शोध-कार्य करना उचित है। तब मैंने "राग-दरबारी" उपन्यास को ध्यान से पढ़ा। श्रीलाल शुक्ल जी ने इस उपन्यास में सामाजिक समस्याओंपर व्यंग्य प्रहार करके सद्यस्थिति पाठकों के समुख रखी है। तब मेरे मन में इस उपन्यास के प्रति रुची पैदा हुई और साथ ही साथ उसका उध्यायन करने की जिज्ञासा बढ़ी, तभी मैंने निर्णय किया कि, इसी उपन्यास पर लघु शोध प्रबन्ध सादर करूँ।

डॉ. वसंत मोरे जी के निर्देशन में मैंने "राग-दरबारी" उपन्यास के अनुसंधान को पाँच अध्याय में विभाजित किया है। "श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" उपन्यास का अनुशीलन" ऐसा शीर्षक देकर विषय का चुनाव किया है।

"राग-दरबारी" उपन्यास पर अनुसंधान का कार्य :-

विषय का चुनाव करने से पहले शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में मैंने लघु-शोध प्रबन्ध की सुची पत्र को देखा। तब मुझे पता चला की, श्रीलाल शुक्ल जी के साहित्यपर शोध-कार्य नहीं हो चुका है। साथ ही साथ "राग-दरबारी" उपन्यासपर भी किसीने शोध-कार्य नहीं किया है।

इसीलिए मैंने निश्चय किया कि, श्रीलाल शुक्ल जी के "राग-दरबारी" उपन्यास पर अनुसंधान का कार्य करके लघु-शोध-प्रबन्ध सादर करूँ। डॉ. वसंत मोरे जी के निर्देशन में "राग-दरबारी" उपन्यास पर अनुसंधान का कार्य प्रारम्भ किया।

अनुसंधान के प्रारम्भ में मेरे मन में निम्न लिखित प्रश्न थे :-

१) "राग-दरबारी" शीर्षक का अर्थ क्या है ?
२) "राग-दरबारी" सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है ?
३) "राग-दरबारी" उपन्यास में किन किन समस्याओं का चित्रण हुआ है ?

उपरयुक्त प्रश्नों के उत्तर उपसंहार में देने की कोशिश की है।

अध्याय विभाजन :-

प्रथम अध्याय — "श्रीलाल शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय"

प्रथम अध्याय में श्रीलाल शुक्ल जी के व्यक्तित्व का सामान्य प्ररिचय दिया है। उनका जन्म, शिक्षा, नौकरी तथा साहित्य लेखन में प्रवेश आदि का विवेचन किया है। शुक्ल जी के कृतित्व में उनके व्यंग्य लेखों का प्रारम्भ तथा प्रथम उपन्यास 'सुनी घाटी का सूरज" से लेकर अन्य उपन्यासों का विवेचन दिया है। "राग-दरबारी" उपन्यास को 'साहित्य अकादमी" पुरस्कार मिला है।

द्वितीय अध्याय -- "राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु"

द्वितीय अध्याय में "राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन दिया है। इस उपन्यास की कथावस्तु के तत्व और प्रकारों से दिया है।

तृतीय अध्याय -- "राग-दरबारी" उपन्यास में पात्र "

तृतीय अध्याय में "राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित विविध पात्रों का विवेचन किया है। श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" उपन्यास में विविध पात्रों का चरित्र-चित्रण, कथावस्तु और घटनाओं की अनुरूप दिया है।

चतुर्थ अध्याय -- "राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित कथोपकथन और देशकाल वातावरण"

चतुर्थ अध्याय में "राग-दरबारी" में चित्रित कथोपकथनों का उनकी विशेषताओं के अनुसार चित्रण किया है। "राग-दरबारी" उपन्यास में वर्णित देशकाल वातावरण का विवेचन कथावस्तु और पात्रों के अनुकूल दिया है।

पंचम अध्याय -- "राग-दरबारी" उपन्यास में भाषासौष्ठव और व्यंग्य"

पंचम अध्याय में "राग-दरबारी" उपन्यास की भाषा शैली का विवेचन दिया है। "राग-दरबारी" व्यंग्यात्मक रचना होने के कारण उसमें चित्रित विविध ग्रामीण सामाजिक समस्याओंपर किया गया तीखा व्यंग्य प्रहार का विवेचन दिया है।

उपसंहार -- उपसंहार में मैने उपरयुक्त सभी अध्यायोंके निष्कर्ष तथा प्रश्नों के उत्तर दिये है।

ऋणनिर्देश :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" इस उपन्यास पर अनुसंधान करते समय मै अनेक लोगों का ऋण पात्र हुँ, जिनके प्रति ऋणनिर्देश व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

सबसे प्रथम आदरणीय डॉ• वसंत मोरे जी का ऋण मुझपर अधिक है। मोरे जी के आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण का प्रतिफलन यह प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध है। यह शोध-प्रबन्ध उनके आशीर्वाद एवं कृपापूर्ण सक्षम निर्देशन में लिखा गया है। इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हुँ। उनके कृपा का एहसास मुझे जीवन में हमेशा रहेगा। मैं उनके प्रति आत्मीयता पूर्ण ऋण प्रकट करता हुँ।

आदर्णीय डॉ• डी•के• गोटुरे, प्रा• हिरेमठ, डा• पी•एस• पाटील, डा• अर्जुन चव्हाण, प्रा• तिपले, प्रा• मुजावर, जी का आशीर्वाद और प्रेरणा सदैव मेरे साथ रही। अत: उनके प्रति मैं सविनय आदर प्रकट करता हुँ।

मेरे परिवार के माता-पिता, भाईयों का साथ मुझे मिला। उन्होंने मुझे शोधकार्य में प्रोत्साहित किया, इसलिए मैं•उनका आभार प्रकट करता हुँ। इस कार्य में मेरी पत्नी सौ• सरला का सहकार्य अधिक है। उसने मुझे हमेशा ही प्रोत्साहीत किया और लघु-शोध प्रबंध सादर करने में प्रेरित किया।

राजा शिवछत्रपती महाविद्यालय, कानडेवाडी के अध्यक्ष बाबा कुप्पेकर जी, कॉलेज के प्रिंसिपल और सभी अधिव्याख्याते जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन दिया, उनके प्रति मैं आभार प्रकट करता हुँ।

इस शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में सहाय्यता करनेवाले वर्गमित्रों और हितचिंतकोने सामग्री संकलन में मुझे निःस्वार्थ सहयोग दिया, उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हुँ।

शोध छात्र

(श्री काशिनाथ शंकर कटकोळे)

स्थान : कोल्हापुर।

दिनांक : ३०-१२-१९९४•

•••••